ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-3* June- 2017
Anthology : The Research

हिंदी काव्य और कवि

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

सारांश

हिंदी साहित्य की प्रमुख दो विधाऐं हैं- गद्य और पद्य। साहित्य ज्ञान की दृष्टि से दोनों विधाओं का ज्ञान अपेक्षित है, परंतु पद्य साहित्य का ज्ञान विशेष रूप से अपेक्षित है। यदि हम हिंदी साहित्य का गहन ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं तो हिंदी काव्य और हिंदी कवियों के बारे में जानना आवश्यक है जिसके अभाव में हिंदी साहित्य संबंधी हमारा ज्ञान कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता। साहित्य और संस्कृति ज्ञान की दृष्टि से यह परम आवश्यक है। हिंदी कवियों को जानना और उनकी रचनाओं को समझना हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समझने और उसको संरक्षित करने हेतु महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उनकी कविताएं हमें हमारी मूल्यों, आदर्शों, और सामाजिक संस्कृति के बारे में बताती हैं। हिंदी कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध बनाया है। कविताएं हमारी भाषा, संस्कृति, इतिहास, और समाज के विविध पहलुओं को स्पर्श करने का कार्य करती हैं और उन्होंने हमारे जीवन, समाज, और देश के बारे में विचारशीलता और समझ बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रस्तुत शोधपत्र लेखिका के हिंदी साहित्य एवं हिंदी काव्य संबंधी पूर्व अर्जित ज्ञान एवं पुस्तकों, शोध प्रबंधों, शोधपत्रों और शोध आलेखों में प्रकाशित विषय सामग्री आधारित अध्ययन पर केन्द्रित अध्ययन है जिसके अंतर्गत न केवल हिंदी साहित्य के कुछ प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व का वर्णन और उल्लेख है, वल्कि हिंदी कवियों के बारे में ज्ञान अर्जित करने के महत्व को भी दर्शाया गया है। साथ ही वर्तमान में हिंदी काव्य और कवियों की प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला है।

मुख्य शब्दः हिंदी, साहित्य, विधा, गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, भाषा, इतिहास, आदिकाल।

प्रस्तावना

हिंदी काव्य अत्यंत व्यापक है जो अनेकों कवियों के योगदान से सुशोभित है। हिंदी साहित्य के प्रत्येक युग में अनेकों छोटे-बड़े कवि हुए हैं जिन्होंने अपनी-अपनी तरह से विभिन्न विषयों पर काव्य का सृजन किया है। हिदी साहित्य के इतिहास को निम्नलिखित चार कालों में विभक्त किया गया है-

1. **आदि काल या वीरगाथा काल समयः** 1050 ई. से 1375 ई. तक।

   प्रतिनिधि कविः चन्दबरदायी, जगनिक, विद्यापति, अमीर खुसरो।

2. **भक्ति कालः समयः** 1375 ई. से 1700 ई. तक।

   प्रतिनिधि कविः कबीर, तुलसी, सूरदास, मलिक मुहम्मद जायसी

3. **रीति कालः** समयः 1700ई. से 1900 ई. तक।

   प्रतिनिधि कविः केशवदास, भषण, देव, बिहारी मतिराम ।

4. **आधुनिक कालः** समय : 1900 ई . से आज तक।

   प्रतिनिधि कविः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथलीशरण गुप्त, श्याम नारायण पांडेय, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारीसिंह दिनकर, द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, शिवमंगल सिंह 'सुमन', गोपालदास नीरज, गोपाल प्रसाद व्यास आदि । हिंदी साहित्य के कुछ प्रसिद्द कवि जिन्होंने हिंदी कविता को नयी ऊचाईयों तक पहुंचाया है, निम्न लिखित हैं-

कबीर

कबीर का संबंध 15वीं शताब्दी से है और उनको हिंदी काव्य के अखंड स्तंभ के रूप में ख्याति प्राप्त है। कबीर ने अपने दोहों और सबदों के माध्यम से समकालीन बुराइयों को न केवल उजागर किया, वल्कि उनका उपहास कर उनको समाप्त करने का सन्देश दिया। कबीर ने जाति, धर्म और समाज व्यवस्था के प्रति संवेदनशीलता और समाजसेवा के लिए अपनी वाणी का उपयोग किया। उन्होंने जातिवाद, पाखंड और अंधविश्वास की आलोचना की। कबीर के दोहे जीवन की सत्यता, नैतिक मूल्यों और ईश्वर की एकता विषय पर केन्द्रित हैं और वे लोगों को धार्मिक सहिष्णुता, ईश्वर की एकता और सच्चे प्रेम की ओर प्रेरित करते हैं। वर्तमान में भी कबीर के दोहे लोगों को पाखंड से दूर रखने में प्रासंगिक हैं।

तुलसीदास

तुलसीदास ने भगवान् राम के जीवन की कथा की सरल और सुंदर भाषा में अभिव्यक्ति देकर स्वयं को आध्यात्मिक व्यक्तित्व और संत के रूप में स्थापित किया। वे मुख्य रूप से अपने रामचरितमानस, जिसे 'अवधी' भाषा में लिखा गया, के लिए जाने जाते हैं। उनकी रचनाऐं जनता को धर्म, नैतिकता, और आदर्शों से जुड़कर आदर्श जीवन जीने हेतु प्रेरित करती हैं। 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली' और 'विनय पत्रिका' आदि उनकी अन्य कविताऐं हैं जो उनकी भक्ति भावना, विश्वास, और आत्मा के प्रति समर्पण की भावनाओं को प्रकट करती हैं।

सूरदास

जन्मांध सूरदास प्रसिद्ध भक्ति कवि और संत थे जिन्होंने श्री कृष्ण की बाल लीलाओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। भगवान श्रीकृष्ण के प्रेमी और उनके अनुयायी सूरदास की बृज भाषा में लिखित रचनाएँ श्रीकृष्ण और राधा के प्रेम, उनके विचारों और भक्ति विषयों से ओतप्रोत हैं। सूरदास की प्रमुख रचनाएँ 'सूरसागर', 'सूरसारावली', 'सूरसरावली वृत्त' और 'सूरसारावली व्याख्या' हैं जिनमें उन्होंने श्रीकृष्ण के बाल लीलाओं, गोपियों के कृष्ण के प्रति प्रेम, भक्ति और वैराग्य के विषयों को गहराई से व्यक्त किया है। उनकी रचनाएँ अध्यात्म और भक्ति प्रधान हैं। सूरदास के पद आज भी कृष्ण प्रेमियों में लोकप्रिय हैं जिनका गायन करके वे श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति प्रकट करते हैं।

रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह 'दिनकर' जिनको राष्ट्रकवि का दर्जा प्राप्त है, भारतीय साहित्य की ज्ञेय हस्तियों में से एक थे। राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति से ओतप्रोत उनकी कविताऐं पाठकों में राष्ट्रप्रेम उत्पन्न करती हैं। उनका योगदान केवल काव्य सृजन तक सीमित नहीं था, अपितु उन्होंने साहित्य की अन्य विभिन्न शाखाओं में भी अपार योगदान दिया। वे मुख्यतः काव्य, नाटक, उपन्यास, आलोचना और संस्मरण के लिए जाने जाते हैं। उनकी रचनाएं 'कुरुक्षेत्र', 'राष्ट्रीय गीत', 'संचयिता', 'परिश्रम पर्व', 'समर शेष है' आदि उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतियों द्वारा संगठित होकर दिखाए गए साहस और बलिदान के लिए अपनी कविताओं के माध्यम से सराहना की। 1972 में उनके साहित्यिक योगदान के लिए उनको हिंदी साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार 'भारतीय ज्ञानपीठ' प्रदान किया गया।

सुमित्रानंदन पंत

हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख स्तंभ सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति के कवि के रूप में ख्याति प्राप्त है। 1900 में उत्तराखंड के कौसानी गाँव में जन्मे पंत ने प्रकृतिप्रेम से ओतप्रोत कविताओं का लेखन कर हिंदी साहित्य के उच्च क्षितिज पर अपना स्थान सुनिश्चित किया। प्रकृति- सौंदर्य, प्रेम, मानवता आदि विषय उनके काव्य के प्रमुख विषय थे। सुमित्रानंदन पंत का काव्य व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की मुश्किलों और विरोधाभासों का वर्णन है। 'चिदंभर', 'पलाश के फूल', 'गीतिमय', 'लोकायत' और 'काला और बूढ़ा चाँद' आदि उनकी कविताऐं आज भी हिंदी काव्य प्रेमियों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। पंत को उनके साहित्यिक योगदान के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और पद्म भूषण समेत कई महत्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी अनोखी शैली के साथ हिंदी कविता को नई दिशा और आयाम दिया। हिंदी काव्य जगत में छायावादी अंदोलन के प्रणेता निराला ने हिंदी काव्य को अपने अद्वितीय दर्शन और जीवन अनुभव से आच्छादित किया। उनकी रचनाएं अनुपम सौंदर्य और उनके आत्मीय भावनाओं के प्रति गहरी संवेदनशीलता का परिचायक हैं। उनकी लेखनी न केवल काव्य सृजन हेतु, वल्कि कहानी, उपन्यास और संस्मरण लेखन हेतु भी उपयुक्त थी। 'अनामिका', 'पर्वत प्रदेश में पावस', 'गीतिका', 'आरावली' और 'निर्लज्ज' आदि उनकी प्रसिद्द रचनाऐं हैं।

मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के प्रमुख कवियों में से एक थे जिन्होंने अपनी विभिन्न विषयों पर कविताऐं लिखकर अपनी काव्य लेखन प्रतिभा का परचम लहराया। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया और उन्हें एक महान कवि के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।उनकी काव्य रचनाओं में सामान्य विषयों के अलावा राष्ट्रीय भावना और

स्वाधीनता के प्रतीक रूप में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रशंसा शामिल थी। उनकी रचनाओं का भाषायी और सांस्कृतिक तत्व विशेष रूप से सराहनीय है। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएं हैं: जयशंकर प्रसाद, आधार, सरजनहार, उर्वशी, यशोधरा, बाली-विलाप, गौरी शंकर, चित्री, इत्यादि।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का संबंध हिंदी साहित्य के छायावादी युग से है और छायावादी कविता की सफ़लता में उनका विशेष योगदान रहा। जयशंकर प्रसाद ने छायावादी कविता को प्रकृतिकरण दिया, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने उसमें मुक्ति को मूर्त रूप दिया और सुमित्रानंदन पंत ने नाजुकता की कला लाई, वहीं वर्मा ने छायावादी कविता को जीवन दिया। आज भी महादेवी छायावादी युग के एक प्रमुख स्तंभ के रूप में विख्यात हैं। हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा का उदय क्रांति के समान था। उनकी कविताऐं हृदय की गहराई से निकली ऐसी प्रभावी अभिव्यक्ति थी जो सीधे पाठक हृदय तक पहुंचती थी। उन्होंने हिंदी कविता में ब्रजभाषा कोमलता का परिचय दिया। अपनी कृतियों के माध्यम से उन्होंने भाषा, साहित्य और दर्शन के तीन क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण कार्य किया जिसने बाद में एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया।

महादेवी वर्मा को उनकी रचनाओं में समाहित विरह वेदना के कारण उनको आधुनिक मीरा कहा जाता है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन लेखन कार्य करते हुए साहित्य साधना में व्यतीत किया और अपनी कविताओं के माध्यम से आधुनिक काव्य जगत को अपने योगदान से आलोकित किया। उनके काव्य में उपस्थित विरह वेदना और भावनात्मक गहनता के चलते ही उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा गया।

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख कवियत्रियों में से एक थीं जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया। उनकी लेखनी युवाओं को देश भक्ति और राष्ट्र प्रेम से जोड़ने तथा साथ ही राष्ट्र के लिए प्राण न्योछावर करने हेतु सशक्त थी। उनकी कविताएं आज भी भारतीय युवाओं को प्रेरित करती हैं।

"झांसी की रानी" चौहान जी की सबसे प्रसिद्ध कविता है जिसमें उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई की बहादुरी और स्वतंत्रता के लिए उनके संघर्ष को प्रभावी तरीके से चित्रित किया है। "मेरा नाम", "स्वर्णिम स्वतंत्रता सेनानी", "राख की रस्मी", और "वीरांगना" आदि उनकी अन्य महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध कविताएं हैं। काव्य लेखन के अलावा सुभद्रा कुमारी चौहान ने लघु कथा और बाल साहित्य लेखन भी किया। उनकी रचनाओं में स्वतंत्रता संग्राम की भावना, मातृत्व, और देशप्रेम की झलक दिखाई देती है। उनका योगदान हिंदी साहित्य के इतिहास में स्थायी रूप से अंकित है।

उपरोक्त उल्लेखित हिंदी कवियों के अलावा भी समय-समय पर हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों में अनेकों महत्वपूर्ण कवि हुए हैं जिन्होंने अपनी कविताओं और अपनी वाणी से हिंदी काव्य को उच्चतर शिखर प्रदान किये हैं। इन कवियों में प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं- अमृता प्रीतम, कुँवर नारायण, अशोक वाजपेयी, गीत चतुर्वेदी, रवींद्रनाथ टैगोर, हरिवंश राय बच्चन, अटल बिहारी बाजपेयी आदि।

अध्ययन का उद्देश्य

1. हिंदी काव्य के माध्यम से हिंदी साहित्य की झलक प्रस्तुत करना।
2. काव्य और संस्कृति के मध्य संबंध की समीक्षा करना।
3. हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों से संबंधित प्रसिद्द कवियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना।
4. हिंदी साहित्य में काव्य के महत्व को प्रकट करना।

प्राक्कल्पना

1. हिंदी काव्य हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है।
2. काव्य और संस्कृति एक दूसरे से सम्बंधित हैं।
3. हिंदी काव्य भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है।
4. हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों ने अनेकों कवियों जन्म दिया।

साहित्य पुनरावलोकन

मनराज (2013) ने अपने शोध प्रबंध 'महादेवी वर्मा और उनका काव्य' के अंतर्गत लिखा है कि 'छायावादी कवियों में प्रेम और प्रकृति के प्रति विशिष्ट आकर्षण है। इस युग के कवि प्रकृति के रूप में भी नारी का रूप देखते हैं, उसकी छवि में किसी प्रेयसी का सौंदर्य के वैभव का साक्षात्कार करते हैं, उसकी चाल-ढाल में किसी नव यौवना की चेष्टाओं का प्रतिबिम्ब पाते हैं। विश्व साहित्य को समृद्ध बनाने में प्रकृति का महत्वपूर्ण योगदान है'।[1]

डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव (2015) ने अपने शोधपत्र 'संत कबीरदास: साहित्यिक परिचय एवं दार्शनिक सिद्धांत' के अंतर्गत कबीर के दार्शनिक विचारों पर प्रकाश डालते हुए टिप्पणी की है कि 'आज के कवियों की व्यक्तिवादी प्रवृत्ति के विपरीत संत कबीर के समय का मानस समष्टिमूलकता की ओर झुका हुआ था। कबीर के समय के कवियों और लेखकों की दृष्टि समाज पर ही केन्द्रित थी। समाज की विषमताओं की दारुण व्यथाओं से उन्हें इतनी फुर्सत नहीं थी कि वे स्वयं के सुख की परिकल्पना कर पाते। कबीर के दार्शनिक विचार मात्र पलायन अथवा बौद्धिक विकास नहीं हैं,

बल्कि सामाजिक चेतना से अनुप्राणित हैं। वे मात्र सिद्धांत नहीं हैं, अपितु व्यवहार को ढालने का उपक्रम हैं'।[2]

विस्मिता सिंह (2015) ने अपने शोध प्रबंध ' सुभद्रा कुमारी चौहान के समग्र साहित्य का अनुशीलन' के अंतर्गत उल्लेख किया है कि 'सुभद्रा जी का साहित्य हिंदी साहित्य का अध्ययन करने वाले पाठकों के अंतर्मन में एक प्रकार की स्फूर्ति और उत्साह के भाव को उत्पन्न करता है। राष्ट्रिय सांस्कृतिक काव्यधारा की वीर रस की प्रमुख कवियत्री के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान का स्थान आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में सदैव अमर रहेगा'।[3]

शोधपद्धति

प्रस्तुत शोधपत्र मूलतः लेखिका के हिंदी साहित्य के पूर्व अर्जित ज्ञान और अध्ययन पर आधारित है। शोधपत्र लेखन हेतु लेखिका द्वारा न केवल पुस्तकीय ज्ञान का प्रयोग किया, वल्कि इंटरनेट साइटों पर उपलब्ध विषय संबंधी विभिन्न शोध अध्ययनों में उपलब्ध विषय सामग्री का भी प्रयोग किया।

निष्कर्ष

हिंदी काव्य एक धनी काव्य है जिसमें निम्न लिखित साहित्यकारों का योगदान समाहित है-

1. रामधारी सिंह दिनकर (उर्वशी, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, संस्कृति के चार अध्याय इत्यादि)
2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति)
3. जयशंकर प्रशाद (कामायनी, स्कंदगुप्त, कंकाल इत्यादि)
4. मैथिलीशरण गुप्त (भारत भारती, साकेत, जयद्रथ वध इत्यादि)
5. कबीर
6. रहीम
7. मलिक मोहम्मद जयसी
8. निदा फ़ाज़ली (दुनिया जिसे कहते हैं)
9. हरिवंश राय बच्चन आदि प्रमुख हैं।

भक्ति काल में भक्ति संबंधित रचनाओं के साथ-साथ काव्य के आवश्यक अंग रस, छन्द, अलंकार, बीम्ब, प्रतीक दोहा, सोरठा, योजना रुपक भाव का सुन्दर चित्रण हुआ है। इस प्रकार भक्ति काल का महत्व साहित्य और भक्ति भावना दोनों ही दृष्टियों से बहुत अधिक है। इसी कारण इस काल को स्वर्ण युग कहा जाता है। तुलसीदास, कबीरदास आदि भक्ति काल के कवि है। यह निर्विवाद है कि कबीर एक संत साधक थे।काव्य रचना उनका लक्ष्य नहीं था।वे पढ़े-लिखे नहीं थे।कबीर के विचारों का अध्ययन करने वालों ने उनकी वाणी में निहित कुछ ऐसी विशेषताओं को लक्षित किया हैं जिसके आधार पर संगीत तत्त्व को प्रतिष्ठित किया जा सकता है।

केशव, चिंतामणि, देव, बिहारी, मतिराम, भूषण, घनानंद, पद्माकर आदि। इनमें से केशव, बिहारी और भूषण को रीतिकाल का प्रतिनिधि कवि माना जा सकता है। बिहारी ने दोहों की संभावनाओं को पूर्ण रूप से विकसित कर दिया। आपको रीति-काल का प्रतिनिधि कवि माना जा सकता है। छायावाद 1918–1936 तक चला हिंदी कविता के इतिहास का प्रसिद्ध आंदोलन है जिसमे 4 प्रमुख कवि शामिल है। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा। कुछ लोग इसे आधुनिक काल का स्वर्ण युग कहते है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि हिंदी काव्य का हिंदी साहित्य में अग्रणी स्थान है। हिंदी साहित्य के प्रत्येक काल अथवा युग में कवि उत्पन्न हुए हैं और उनके द्वारा विभिन्न प्रकार की कविताऐं सृजित की गई हैं। वर्तमान में भी हिंदी काव्य प्रगति को ओर अग्रसर है।

संदर्भ सूची

1. *मनराज, 'महादेवी वर्मा और उनका काव्य', वी. बी. एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 2013*
2. *डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव, 'संत कबीरदास: साहित्यिक परिचय एवं दार्शनिक सिद्धांत', शोध मंथन, 2015*
3. *विस्मिता सिंह, 'सुभद्रा कुमारी चौहान के समग्र साहित्य का अनुशीलन', हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, 2015*